स्थूल से सूक्ष्म तक - क्वांटम दृष्टि

हम अपने शरीर को केवल शारीरिक अंगों से बना हुआ समझते हैं, लेकिन जब हम गिरते हैं और चोटिल होते हैं, तो हम एक्स-रे (X-ray) करते हैं ताकि देख सकें कि हमारी हड्डियाँ टूटी हुई हैं या नहीं। इस एक्स-रे में, खाली स्थान में केवल हड्डियाँ ही दिखाई देती हैं, खाली स्थान में अंग नहीं दिखाई देते। इसी प्रकार, यदि शरीर में एक गांठ है, तो हम कैंसर है या नहीं यह देखने के लिए पीईटी स्कैन (PET scan) करते हैं। इस पीईटी स्कैन में, खाली स्थान में हड्डियाँ बिल्कुल भी नहीं दिखाई देती, केवल खाली स्थान में कोशिकाएँ ही दिखाई देती हैं।

इसी तरह, ये कोशिकाएँ क्या हैं? ये कोशिकाएँ परमाणुओं से बनी हैं। तो यहाँ क्या असली है और क्या नकल है? खाली स्थान में अंग असली हैं या खाली स्थान में परमाणु असली हैं? वास्तव में, असली खाली स्थान में परमाणु हैं, और नकल खाली स्थान में अंग हैं।

परमाणु किस चीज से बने हैं? इसका पता लगाने के लिए, क्वांटम वैज्ञानिकों ने अंदर जाकर देखा और पाया कि इसमें 99% निराकार ऊर्जा है और केवल 1% आकार है। फिर से, यदि हम खुद से पूछें कि असली क्या है, तो हमें एहसास होता है कि असली खाली स्थान में परमाणु नहीं हैं, बल्कि असली केवल खाली स्थान या निराकार है, और यह विभिन्न आकारों में प्रतीत होता है। (One existence appearing as many)

Nobel Prize in Physics 2023

परमाणु के नाभिक के चारों ओर इलेक्ट्रॉन्स अत्यधिक उच्च गति से परिक्रमा करते हैं, जिससे उन्हें वास्तविक समय में देखना असंभव हो जाता है। हालांकि, Pierre Ferenc Anne और अन्य के शोध के कारण, इस चुनौती को पार कर लिया गया है। उन्होंने ऐसी प्रकाश तरंगें बनाईं जो केवल एक अटोसेकंड तक अस्तित्व में रहती हैं। एक अटोसेकंड एक सेकंड का एक क्विंटिलियनवां हिस्सा है (10^-18)।

यदि आप सामान्य कैमरे से चलती ट्रेन का चित्र लेने का प्रयास करेंगे तो आपको धुंधली तस्वीर मिलेगी। उच्च शटर गति वाला कैमरा ट्रेन की गति के दृश्य को स्थिर कर देता है और बेहतर चित्र प्रदान करता है। इन अल्पकालिक प्रकाश तरंगों ने वैज्ञानिकों को परमाणु के भीतर की प्रक्रियाओं की छवियों को कैप्चर करने में सक्षम बनाया है। इन चित्र के कारण वैज्ञानिक इलेक्ट्रॉनों को देख सकते हैं। लेकिन ये चित्र अस्पष्ट धुंधले इलेक्ट्रॉनों को दिखा रही हैं।

(Nobel Prize in Physics 2023 to Pierre Agostini, Ferenc Krausz and Anne L'Huillier.)

तात्पर्य यह है कि, वैज्ञानिक परमाणुओं को स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते हैं। क्योंकि वे बहुत तेजी से चलते हैं। चूंकि परमाणु या कोशिकाएं तीव्र गति से गतिशील होती हैं, इसलिए चित्र देखकर यह स्पष्ट रूप से बताना असंभव है कि कौन अच्छा है और कौन बुरा है। इसी तरह, उन्हें चलते हुए रोकना भी असंभव है। वैज्ञानिक यह भी कहते हैं कि इलेक्ट्रॉन्स और प्रोटॉन्स के बीच की दूरी 3 किलोमीटर है। इसलिए पदार्थ या कोशिकाओं या परमाणुओं को छोड़ दें जो केवल 1% हैं और निराकार के साथ एकजुट हो जाएं जो 99% है।

शुद्ध ऊर्जा-शुद्ध चेतना

इसका अर्थ है कि आपको सत्य (असली) को पकड़ना चाहिए और असत्य (नक़ल) को छोड़ना चाहिए। ये नक़ल वास्तविक नहीं हैं, हम बस उन्हें वास्तविक मानते हैं। यानी, नाम, रूप, क्रियाएँ, सुख, दुःख, जीत, हार, शरीर के अंग, स्वास्थ्य, और बीमारियाँ - दुनिया में सब कुछ केवल एक भ्रम है, एक मात्र मान्यता है। वास्तव में, यहाँ केवल शुद्ध ऊर्जा, शुद्ध चेतना है। इसलिए, समझें कि यह निराकार ऊर्जा विभिन्न अशाश्वत रूपों में प्रकट हो रहा है।

इसका मतलब यह है कि हम यह स्वीकार करते हैं कि आंखें यानी इंद्रियां ठीक से काम नहीं कर रही हैं और वास्तविकता नहीं दिखा रही हैं। इंद्रियों के माध्यम से हम सृष्टि के रहस्य को नहीं समझ पाते हैं। इसीलिए हम एक्स-रे और पेट स्कैन का उपयोग करते हैं जिसमें सूक्ष्म दर्पण होते हैं। इनके माध्यम से ही हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यह अच्छा है और यह बुरा है। लेकिन, इन उपकरणों के साथ भी, हमें शाश्वत समाधान नहीं मिलता है। इसका कारण यह है कि अच्छे और बुरे स्थिर नहीं हैं और हमेशा बदलते रहते हैं, और रूपांतरित होते रहते हैं। उन्हें कसकर पकड़ने से हम संतुलन खो देते हैं और हमेशा असंतुलन रह जाते हैं।

चूंकि हम वैसे भी सूक्ष्म से देखने की इच्छा रखते हैं, तो आइए इस दुनिया को क्वांटम दृष्टि वाले चश्मे से देखें, जिसमें अधिक सूक्ष्मता से देखने की क्षमता है। अर्थात् हम इस संसार को स्थूल इन्द्रियों से नहीं, अपितु सूक्ष्म इन्द्रियों से देखें, मतलब उन इन्द्रियों के साथ जो सर्वव्यापी हैं। तभी हमें शाश्वत समाधान मिलेगा। अर्थात्, यदि हम इस संसार को क्वांटम दर्पणों से देखें, तो हमें पता चलेगा कि केवल शाश्वत ऊर्जा-चेतना ही असली है।

इसलिए, यदि आप सीमित रह कर, सीमित इंद्रियों से दुनिया को देखते हैं, तो हम सुख या दुःख का अनुभव करेंगे। लेकिन, यदि आप असीमित हो जाते हैं और यदि आप असीमित इंद्रियों के साथ इस दुनिया का अनुभव करते हैं, तो आप अनुभव से जानेंगे कि: यही सुख, यही दुःख, यही द्वैत दुनिया, यही कलियुग - स्वयं ही परिवर्तित हो जाता है और हम दिव्य दुनिया, ब्रह्मानंद या सच्चिदानंद स्वरूप का अनुभव करेंगे।

इसलिए कहा जाता है कि दृष्टि से सृजन होता है यानी सृष्टि दृष्टिकोण पर आधारित है। यदि आप सीमित दृष्टि या स्थूल दृष्टि से दुनिया को देखते हैं, तो आपके अनुभव सीमित होंगे। लेकिन यदि आप असीमित दृष्टि या सूक्ष्म दृष्टि से दुनिया को देखते हैं, तो केवल दिव्य आनंद और एकता ही शेष रहेगी।

यानी, यदि आप एकता में एक हो जाते हैं और तीन गुणों को (सकारात्मक नकारात्मक तटस्थ) समान दृष्टि से देखने में माहिर हो जाते हैं, तो आप किसी भी अनुभव को तुरंत बना सकते हैं।

इस सृष्टि में 50% अचल सर्वव्यापी ऊर्जा-चेतना, 49% निराकार ऊर्जा-चेतना जो सभी दिशाओं में गतिशील है, और केवल 1% आकार हैं जो निराकार ऊर्जा-चेतना से बने हैं। इसका अर्थ है 99% निराकार है - 1% साकार है; इसका अर्थ है 50% गतिशील है और 50% अचल है। इस निराकार ऊर्जा-चेतना मिलन को सच्चिदानंद स्वरूप भी कहा जाता है। यह सच्चिदानंद स्वरूप

अक्षय पात्र जैसा है। इसलिए, जब आप इस अवस्था के साथ एकजुट हो जाते हैं, तो आप जो भी चाहते हैं वह तुरंत प्रकट हो जाएगा।

इसलिए प्रतिदिन आप स्थूल से सूक्ष्म की ओर यात्रा करें और यथासंभव समय सूक्ष्म शुद्ध ऊर्जा के साथ एकजुट रहें। अर्थात भौतिक पदार्थ से ⇌ कोशिका ⇌ अणु ⇌ परमाणु ⇌ उपपरमाणु ⇌ ईश्वर कण ⇌ ऊर्जा (From Physical Matter ⇌ Cells ⇌ Molecules ⇌ Atoms ⇌ Subatomic particles ⇌ God Particles ⇌ Energy). जब आप निराकार ऊर्जा के साथ एकजुट हो जाते हैं, तब आप जो चाहते हैं उसे चुनें और भौतिक दुनिया में फिर से प्रवेश करें, यह महसूस करते हुए कि यह भौतिक दुनिया में प्रकट हो रहा है।

यहां यह समझें कि, आपको स्थूल (पदार्थ) से सूक्ष्म (ऊर्जा) तक, इधर-उधर यात्रा करने, पुराने कर्मों, अच्छे और बुरे अनुभवों को अनंत में विलीन करने तथा नए अनुभवों को चुनने में निपुण होना होगा।

To know more about Quantum Physics click this link.. https://www.youtube.com/post/UgkxJnSt137p0tvQw9L5eyagYR55EbHB8k7O

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**

त्रिगुण साधना

हम आमतौर पर सोचते हैं कि, जो कुछ भी हमारे भाग्य में होता है वह हमारे पास आता है। यानी अच्छा है तो अच्छा आएगा या बुरा है तो बुरा आएगा। लेकिन अब से इस विश्वास को बदल दो. त्रिगुण समान रूप से मिश्रित शुद्ध ऊर्जा-चेतना, भाग्य से, सभी से, मेरे पास आरही है। इसी तरह, त्रिगुण (अच्छे बुरे तटस्थता) समान रूप से मिश्रित शुद्ध ऊर्जा-चेतना को मैं सबको भेजूंगा. जब हम इस शुद्ध अवस्था के साथ घुलमिल जाते हैं, तभी हमें स्वतंत्र इच्छा(FreeWill) प्राप्त होगी। अर्थात अंदर और बाहर यह विश्वास रखें कि, शुद्ध ऊर्जा-चेतना, हर चीज से हर चीज में प्रवाहित हो रही है।